गौतम बुद्ध महाविद्यालय

सम्बद्ध-सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

पचपेड़वा, सांगठ, संतकबीर नगर (उ.प्र.)

(शिक्षा संकाय)

पाठ्य सहगमी

सत्र : 2024-2025

छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका का नाम पूजा सिंह

शिक्षण विषय पाठ्य सहगामी

महाविद्यालय अनुक्रमांक

पाठ्यसहगामी क्रियाओं का अर्थ एवं परिभाषा :-

पाठ्य सहगामी क्रियाओं से अभिप्राय उन क्रिया-कलापों से है जो छात्र के सर्वांगीण व्यक्तित्व के विकास करने तथा शिक्षा के पूर्व-निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता देती है। इस सम्बन्ध में प्रोफेसर पठान ने इन क्रियाओं को परिभाषित करते हुए लिखा है, "पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं से तात्पर्य उन छात्र क्रियाओं से है, जिनमें छात्र अध्यापक के मार्गदर्शन में कुछ उत्तर-दायित्वों को सुनियोजित विधि से सम्पन्न करने के लिये भाग लेते हैं।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रकार :-

विद्यालय में कई प्रकार के कई सहगामी क्रियाओं का विकास किया जा सकता है। इन सभी क्रियाओं को निम्न वर्गों में विभक्त किया जा सकता है।

1. शैक्षिक क्रियायें :- शैक्षिक क्रियाओं के अंतर्गत साहित्य परिषद, विज्ञान-कला कलब, भूगोल परिषद, वाणिज्य परिषद आदि।

2. शारीरिक क्रियायें :- शारीरिक क्रियाओं के अंतर्गत सामूहिक खेल, परेड, ड्रिल तैरना, साइकिल चलाना, नाव चलाना,

एन० सी० सी० आदि।

3. साहित्यिक क्रियायें :- इसके अन्तर्गत साहित्य सभा, वाद - विवाद परिषद, पत्रिका प्रकाशन, बुलेटिन बोर्ड, दीवार पत्रिका आदि।

4. नागरिकता प्रशिक्षण सम्बंधी क्रियायें :- इसके अन्तर्गत संगीत - गोष्ठी, कवि - सम्मेलन, चित्रकला - प्रतियोगिता, विद्यालय - बैण्ड, नृत्य आदि आते हैं।

6. शिल्प तथा कला सम्बंधी क्रियायें :- इसके अन्तर्गत सिलाई - बुनाई, कढाई, मेहन्दी रचना, खिलौना बनाना, जिल्दसाजी, मोमबत्ती बनाना, साबुन बनाना आदि आते हैं।

7. सामान्य क्रियायें :- इसके अन्तर्गत भ्रमण, पिकनिक, ग्राम्य - पर्यवेक्षण, बालचर, स्काउटिंग, प्रौढ - शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा आदि आते हैं।

8. अन्य क्रियायें :- इसके अन्तर्गत .... टिकट या सिक्के - संग्रहालय बनाना, सफाई एवं स्वच्छता अभियान आदि आते हैं।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं का महत्व

पाठ्य सहगामी क्रियाओं की अधोलिखित विशेषतयें होती हैं।

1. **व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक :-** प्रत्येक व्यक्ति दूसरो के द्वारा अस्वीकार किये जाने की एक मूलभूत आवश्यकता रखता है। इसके साथ ही वह सुरक्षा भी चाहता है। सुरक्षा की भावना यह अपेक्षा करती है कि समाज द्वारा उसका आश्वासन प्राप्त हो। छात्र-क्रियाओं का कार्यक्रम इन मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायता प्रदान करता है। यह कार्यक्रम इन आवश्यकताओं के अतिरिक्त आत्म-अभिव्यक्त, स्वयं को तथा दूसरों को जानने की समझदारी, स्वयं की रुचियों को व्यापक बनाने, स्वयं के कार्यों को नियन्त्रित करने की शक्ति तथा नवीन परिस्थितियों पर व्यवस्थित होने की आवश्यकताओं की पूर्ति भी करता है।

2. **सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति मे सहायक :-** सामाजिक आवश्यकताओं इन वैयक्तिक आवश्यकताओ में घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। सामाजिक शब्द का उपयोग दूसरों के साथ सन्तोषजनक सम्बन्ध विकसित करने की तीव्र भावना का अनुभव करता है। यह आवश्यकता उसको कुछ आचार-विचार

समझदारी, इसरो के साथ अच्छा व्यवहार करने की स्वीकृत ढँगो को सिखाने के लिए बाध्य करती है। छात्र क्रियायें व्यक्ति को नेतृत्व करने एवं अनुशासन में रहने की शक्ति तथा सामाजिक संघर्षो को दूर करने की योग्यता प्रदान करती है।

3. नागरिकता का प्रशिक्षण :- छात्र क्रियाओं का कार्यक्रम बालको वास्तविक स्थितियों का सामना करने तथा समुदाय को सेवा स्वतन्त्र निर्णय करने के लिये बहुत अवसर प्रदान करता है। उसके अतिरिक्त यह उनमें लोकतन्त्रीय नागरिकता का भी विकास करता है। इन क्रियाओं के द्वारा बालको में विभिन्न नागरिक कुशलताओं एवं आदतों का विकास होता है तथा उनको व्यवहारिक रूप से नागरिक प्रशिक्षण प्राप्त होता है। अतः छात्र - क्रियाओं से बालको में उन गुणो - नेतृत्व, उत्तरदायित्वपूर्ण की क्षमता, दूसरो के अधिकारो को आदर की दृष्टि से देखने की भावना सामाजिक प्रगति के लिये उत्साह तथा कार्य क्षमता, दूसरो के कल्याण की भावना आदि को विकसित किया जाता है। जो कि लोकतन्त्रीय नागरिकता के आवश्यक तत्व है।

4 किशोरावस्था की आवश्यकताओं की पूर्ति :- यह अवस्था बहुत ही संवेदनशील होती है। इस अवस्था में अतिरिक्त शक्ति की अधिकता पाई जाती है। इन क्रियाओं के द्वारा उसकी अतिरिक्त शक्ति एवं मूल-प्रवृत्तियों को उनके सामाजिक व्यक्तित्व के विकास एवं समृद्धि के लिये विभिन्न कार्यों में सलंग्न किया जाता है। और विद्यालय में क्लबों एवं संगठनों के माध्यम से किशोरावस्था की बौद्धिक व संवेगात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति करके उनका सामाजिक एवं नैतिक विकास किया जाता है।

5. शारीरिक विकास :- विभिन्न प्रकार की शारीरिक क्रियाओं द्वारा बालक सक्रिय एवं शक्तिशाली बनता है। खेल-कूद, ड्रिल, व्यायाम, आदि से उसका शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है।

6. नैतिक गुणों का विकास :- इन क्रियाओं में भाग लेने से बालको में सत्यता, ईमानदारी, आत्म-विश्वास, न्यायप्रियता, धैर्य - दृढता, विनय, आज्ञा-पालन आदि गुणों का विकास होता है, जो अच्छे चरित्र का निर्माण करते हैं। बालक इन

क्रियाओं में भाग लेकर अपने स्वार्थ को दूसरे के हित के लिये त्यागना सीख जाता है। जिससे नैतिक गुणों का विकास होता है।

7. **विशेष रुचियों का विकास** :- विभिन्न प्रकार की क्रियायें बालको में विशेष रुचियों के उत्पन्न करने मे भी बहुत सहायक हैं। विद्यालय में संगठित विविध उद्देशीय समितियाँ एवं क्रियायें बालको में सम्भावित गुणों (Potentials) व्यवसायिक कुशलताओ एवं साहित्य रुचियों आदि का विकास करती है। ये विभिन्न कुशलतायें, बालक के भावी जीवन को यह समृद्ध एवं सफल बनाने में सहायक होती हैं। इन क्रियाओं द्वारा बालको के प्रिय-कार्यो (Hobbies) के विकास के लिये विभिन्न अवसर प्रदान किये जाते हैं। ये 'प्रिय-कार्यो' बालको को अपने अवकाश का सदउपयोग करने में सहायक होती है।

8. **अनुशासन के अनुरक्षण में सहायक** :- छात्र-क्रियाओ से विद्यालय में अनुशासन स्थापित करने में बहुत सहायता मिलती है। इसके माध्यम से बालक विभिन्नताओ व गणो की स्वीकृति विद्यालय अनुशासन की समस्या का बहुत महत्वपूर्ण समाधान है। कार्य की संलग्नता उनको विभिन्न गलत आदतो एवं कार्यो में फँसने से बचाती

ही नही वरन् उनको अपने गुणों एवं क्षमताओं तथा आत्म विश्वास के विकास के लिये अवसर प्रदान करती है।

पाठ्य सहगामी क्रियाओ का आयोजन :-

जैसे कि हम जानते है कि "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ का निवास होता है"। इस को चरितार्थ करते हुये दिनाँक दिन मंगलवार को पाठ्य सामग्री क्रियाओं के अन्तर्गत गौतम बुद्ध महाविद्यालय पचपेड़वा सन्त कबीर नगर के प्रांगण में बी० एड़० द्वितीय वर्ष सन् ( ) के प्रशिक्षुओं के लिये खेल - कूद प्रतियोगिता का शुभारम्भ मुख्य अतिथि द्वारा किया गया।

इस प्रतियोगिता में कैरम, शतरंज, बैड - मिंटन, कबड्डी, मीटर रेस जैसे खेलो का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में बी० एड० द्वितीय वर्ष के लग-भग सभी प्रशिक्षुओं ने प्रतिभाग किया तथा अपनी क्षमता एंवु प्रतिभा उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इस खेल के शतरंज प्रतियोगिता में बालक वर्ग अम्ब्रीश मिश्रा ने सदानन्द को पराजित किया तथा बालिका वर्ग मे रंजना ने शान्ति को पराजित कर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

समस्त प्रतियोगिता का समापन :-

इस प्रकार संध्या चार वर्ष तक खेलो की सभी प्रतियोगिताएँ समाप्त हो जाती है। इसके बाद मैदान में एक सभा होती है। इस सभा में एक मंच बना होता है। जहाँ मुख्य

अतिथि प्राचार्य एवं मद्याविद्यालय के सभी शिक्षक गण बैठते हैं। प्रत्येक प्रतियोगिता में विजेता खिलाड़ियों व टीमों को एक-एक करके बुलाया जाता है एवं मुख्य अतिथि उन्हें पुरस्कार देते हैं। तालियों के पुरस्कार पाने वाले खिलाड़ियों के चेहरे पर गौरान्वित भाव दूर से ही देखा जा सकता है। इस खेल प्रतियोगिता का समापन करते हुए आदरणीय मुख्य अतिथि ने कहा कि मस्तिष्क के विकास का साधन खेल है, इससे बच्चो में स्नेह और मित्रता का भाव जागृत होता है।